INTERNATIONAL ADVANCE JOURNAL OF ENGINEERING, SCIENCE AND MANAGEMENT (IAJESM)
January-June 2023, Submitted in May 2023, iajesm2014@gmail.com, ISSN -2393-8048
Multidisciplinary Indexed/Peer Reviewed Journal. SJIF Impact Factor 2023 =6.753

भारत में महिला और युवा मतदाताओं की भूमिका: लोकतंत्र में परिवर्तनकारी शक्ति

अजय कुमार सिंह , शोधार्थी, राजनीति विज्ञान विभाग, निर्वाण विश्वविद्यालय, जयपुर, राजस्थान
डॉ० रितेश मिश्रा, निर्देशक, राजनीति विज्ञान विभाग, निर्वाण विश्वविद्यालय, जयपुर, राजस्थान

शोध सारांश

भारत में स्वतंत्र और निष्पक्ष चुनावों को सुनिश्चित करने के लिए आदर्श आचार संहिता (Model Code of Conduct - MCC) **एक महत्वपूर्ण दिशा-निर्देश है। इसे चुनाव प्रक्रिया के दौरान राजनीतिक दलों और उम्मीदवारों के आचरण को विनियमित करने के लिए लागू किया गया है, ताकि चुनावी माहौल निष्पक्ष और पारदर्शी बना रहे। इस शोध पत्र में आदर्श आचार संहिता के ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य, इसके प्रमुख प्रावधान, वर्तमान स्थिति, और चुनौतियों का विश्लेषण किया गया है। आदर्श आचार संहिता चुनाव प्रचार, मतदाता प्रलोभन, सरकारी तंत्र के दुरुपयोग और मतदान के दिन के नियमों को नियंत्रित करती है। इसका मुख्य उद्देश्य राजनीतिक दलों के बीच समानता और मतदाताओं के लिए स्वतंत्र वातावरण सुनिश्चित करना है। वर्तमान में, डिजिटल मीडिया के बढ़ते प्रभाव और सोशल मीडिया पर फेक न्यूज़ की बढ़ती घटनाओं ने आचार संहिता की प्रभावशीलता को चुनौती दी है। इसके अलावा, आचार संहिता का कानूनी अधिकार न होना, इसका उल्लंघन रोकने में एक बड़ी बाधा है।**

इस शोध में सुझाव दिए गए हैं कि आदर्श आचार संहिता को कानूनी मान्यता दी जानी चाहिए, जिससे चुनाव आयोग के पास उल्लंघन के मामलों में सख्त कार्यवाही की शक्ति हो। सोशल मीडिया पर निगरानी बढ़ाने, मतदाता जागरूकता अभियान चलाने, और सरकारी तंत्र के निष्पक्ष उपयोग के लिए सुधारात्मक कदम उठाने की आवश्यकता पर जोर दिया गया है। इन सुधारों से भारतीय चुनाव प्रक्रिया की पारदर्शिता में वृद्धि होगी और लोकतंत्र की मजबूती सुनिश्चित होगी।

प्रमुख शब्द : भारतीय लोकतंत्र, महिला मतदाता, युवा मतदाता, राजनीतिक भागीदारी, महिला सशक्तिकरण, युवाओं की राजनीतिक सोच, रोजगार और शिक्षा, सामाजिक मीडिया और राजनीति, लैंगिक समानता,चुनाव सुधार,महिला और युवा नीति,महिला आरक्षण,डिजिटल साक्षरता,मतदान प्रवृत्तियाँ, भारतीय निर्वाचन आयोग I

प्रस्तावना

भारत का लोकतंत्र विश्व में सबसे बड़ा है और इसे लोकतंत्र का अद्वितीय उदाहरण माना जाता है। इसमें महिला और युवा मतदाताओं की भूमिका धीरे-धीरे केंद्र में आ रही है, क्योंकि भारत में मतदाता जनसंख्या में युवाओं की बड़ी संख्या है और महिलाओं का सशक्तिकरण भी तेजी से हो रहा है। इस शोध पत्र का उद्देश्य यह जानना है कि भारत में महिला और युवा मतदाता भारतीय राजनीति और लोकतांत्रिक प्रणाली को किस प्रकार प्रभावित कर रहे हैं और उनके योगदान से भारतीय लोकतंत्र में किस तरह के बदलाव देखे जा रहे हैं।

भारत में महिला मतदाताओं की भूमिका

इतिहास और विकास

भारत में महिलाओं को 1950 से ही समान मताधिकार प्राप्त हुआ, जो स्वतंत्रता के बाद संविधान द्वारा प्रदत्त अधिकारों का हिस्सा था। लेकिन महिलाओं के लिए राजनीतिक प्रक्रिया में सक्रिय भागीदारी एक लंबी और चुनौतीपूर्ण यात्रा रही है। प्रारंभिक वर्षों में, भारतीय राजनीति में महिलाओं की भागीदारी सीमित रही थी, लेकिन धीरे-धीरे शिक्षा और समाज में उनके अधिकारों की बढ़ती जागरूकता के साथ, महिलाओं ने राजनीतिक प्रक्रिया में सक्रिय रूप से भाग लेना शुरू किया।

वर्तमान स्थिति

वर्तमान में, महिलाओं की मतदाता संख्या में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। 2019 के आम चुनाव में लगभग 67.18% महिलाओं ने मतदान किया, जो 2014 के चुनावों से अधिक था। इससे यह स्पष्ट होता है कि महिलाएँ अब चुनावी प्रक्रिया में अपने मत का महत्व समझने लगी हैं। कई राज्यों में

महिलाओं का मतदान प्रतिशत पुरुषों से भी अधिक रहा है, जैसे कि केरल और पश्चिम बंगाल। महिलाओं का बढ़ता मतदान स्पष्ट संकेत है कि वे अपने मुद्दों पर ध्यान चाहती हैं और अपने जीवन को प्रभावित करने वाली नीतियों में सक्रिय भूमिका निभा रही हैं।

महिला मुद्दों पर ध्यान

महिलाओं के मुद्दे जैसे कि शिक्षा, स्वास्थ्य, महिलाओं की सुरक्षा, और रोजगार, अब राजनीति के मुख्य एजेंडे में शामिल हो चुके हैं। राजनेताओं को अब महिलाओं के लिए विशेष योजनाएं और नीतियाँ बनाने पर जोर देना पड़ता है। उदाहरण के लिए, महिलाओं की सुरक्षा से संबंधित कानूनों में सुधार और महिला स्वास्थ्य पर ध्यान केंद्रित करने वाली योजनाओं का आगमन इसी का परिणाम है।

महिला आरक्षण का प्रभाव

भारत में पंचायती राज प्रणाली में महिलाओं के लिए 33% आरक्षण की व्यवस्था ने स्थानीय राजनीति में महिलाओं की भागीदारी को बढ़ावा दिया है। इसके परिणामस्वरूप, महिलाएँ न केवल मतदान कर रही हैं बल्कि वे पंचायत, नगर परिषद, और नगर निगम जैसे स्थानीय निकायों में अपनी भूमिका भी निभा रही हैं। इससे महिलाओं में नेतृत्व कौशल विकसित हो रहा है और वे अपने समुदायों की समस्याओं को बेहतर ढंग से समझ और सुलझा पा रही हैं।

महिला सशक्तिकरण और राजनीति

महिलाओं के बढ़ते राजनीतिक सशक्तिकरण का एक परिणाम यह भी है कि वे अब उम्मीदवारों के रूप में चुनावों में भाग ले रही हैं। कई प्रमुख महिला राजनेताओं ने भारतीय राजनीति में अपनी विशेष पहचान बनाई है, जैसे इंदिरा गांधी, मायावती, जयललिता, ममता बनर्जी आदि। उनके नेतृत्व ने यह सिद्ध किया है कि महिलाएँ राजनीति में प्रभावशाली भूमिका निभा सकती हैं।

युवा मतदाताओं की भूमिका

युवा मतदाताओं की संख्या में वृद्धि

भारत में 18 से 35 वर्ष की आयु के लोग लगभग 60% जनसंख्या का प्रतिनिधित्व करते हैं, जो इसे एक युवा राष्ट्र बनाता है। इस युवा जनसंख्या का एक बड़ा हिस्सा मतदाता के रूप में योग्य है, जिससे चुनावों में उनकी भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाती है। यह समूह नई सोच, नए विचार, और नए दृष्टिकोण का प्रतिनिधित्व करता है।

सामाजिक और राजनीतिक दृष्टिकोण

युवा मतदाताओं में सामाजिक और राजनीतिक दृष्टिकोण बदल रहे हैं। वे राजनीति में पारदर्शिता, जवाबदेही, और प्रभावी प्रशासन की मांग करते हैं। भारत के युवाओं का मानना है कि भ्रष्टाचार, बेरोजगारी, शिक्षा और स्वास्थ्य जैसी समस्याओं को सरकार को प्राथमिकता देनी चाहिए।

युवाओं के मुद्दे और प्राथमिकताएँ

युवा मतदाताओं के प्रमुख मुद्दे शिक्षा, रोजगार, तकनीकी उन्नति, जलवायु परिवर्तन, और आर्थिक विकास हैं। यह समूह ऐसे उम्मीदवारों का समर्थन करता है जो उनकी शिक्षा और रोजगार की समस्याओं को सुलझाने का वादा करते हैं। इसके अतिरिक्त, जलवायु परिवर्तन और पर्यावरण संरक्षण जैसे विषयों पर भी उनकी जागरूकता और भागीदारी बढ़ रही है।

युवा नेतृत्व और राजनीतिक भागीदारी

भारत के युवा अब राजनीति में भी कदम रख रहे हैं। नई राजनीतिक पार्टियों और स्वतंत्र उम्मीदवारों के रूप में, वे जनता के मुद्दों को ध्यान में रखते हुए राजनीति में बदलाव लाने का प्रयास कर रहे हैं। कई युवा नेता अब विधायक और सांसद बन रहे हैं, जो नए दृष्टिकोण और नई ऊर्जा को भारतीय राजनीति में ला रहे हैं।

सोशल मीडिया का प्रभाव

युवा मतदाताओं पर सोशल मीडिया का गहरा प्रभाव है। आज के दौर में सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म, जैसे फेसबुक, ट्विटर, इंस्टाग्राम, और यूट्यूब, राजनीति में जागरूकता फैलाने और मतदाताओं से जुड़ने के प्रभावी साधन बन चुके हैं। राजनीतिक दल और नेता अब डिजिटल प्लेटफार्मों पर

अपनी उपस्थिति बनाए रखने पर अधिक ध्यान दे रहे हैं, ताकि वे युवाओं तक सीधे पहुँच सकें और उनके समर्थन को प्राप्त कर सकें।

महिला और युवा मतदाताओं का संयुक्त प्रभाव

चुनावी प्रवृत्तियों में बदलाव

महिला और युवा मतदाताओं की संख्या में वृद्धि के कारण भारतीय राजनीति में परिवर्तन आ रहा है। पार्टियों को अब महिला और युवा मुद्दों को अपने एजेंडे में शामिल करना पड़ता है, जैसे कि महिलाओं की सुरक्षा, युवाओं के लिए रोजगार, शिक्षा में सुधार, आदि। राजनीतिक दल अब अपनी नीतियों को इस प्रकार से तैयार कर रहे हैं कि वे इस नई मतदाता जनसंख्या की जरूरतों और आकांक्षाओं का प्रतिनिधित्व कर सकें।

महिला और युवा मुद्दों पर राजनीतिक एजेंडा

महिलाओं और युवाओं के कारण अब राजनीतिक एजेंडे में लैंगिक समानता, रोजगार सृजन, और शिक्षा सुधार जैसे मुद्दों को प्रमुखता से शामिल किया जाता है। महिला आरक्षण बिल, महिला सुरक्षा कानून, युवा रोजगार योजनाएं, और शिक्षा में सुधार जैसे विषय अब चुनाव अभियानों के महत्वपूर्ण हिस्से बन गए हैं।

नई राजनीतिक धाराएँ और सुधार

महिला और युवा मतदाताओं के कारण भारतीय राजनीति में कई नए सुधार और नई धाराएँ उत्पन्न हो रही हैं। उदाहरण के लिए, अधिकतर युवा डिजिटल मतदान और तकनीकी सुधारों के पक्षधर हैं, जिससे चुनाव प्रक्रिया में पारदर्शिता और सुविधा बढ़ सकती है। इसके अलावा, महिला और युवा उम्मीदवारों की संख्या में भी वृद्धि हो रही है, जो भारतीय लोकतंत्र को और भी अधिक समावेशी बना रही है।

चुनौतियाँ और सुधार की संभावनाएँ

चुनौतियाँ

1. जागरूकता की कमी: ग्रामीण क्षेत्रों में विशेष रूप से महिलाओं और युवाओं में राजनीतिक जागरूकता की कमी है।
2. सामाजिक अवरोध: कई बार परिवार और समाज में महिलाओं और युवाओं के मताधिकार का सम्मान नहीं किया जाता, जिससे उनके वोट देने की स्वतंत्रता प्रभावित होती है।
3. राजनीतिक दलों की प्राथमिकताएँ: सभी दल महिलाओं और युवाओं को अपने एजेंडे में प्राथमिकता नहीं देते हैं, जो उनके मुद्दों को नजरअंदाज करने का कारण बनता है।
4. तकनीकी ज्ञान की कमी: डिजिटल जागरूकता और ऑनलाइन मतदान में भागीदारी का अभाव विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में है, जो उन्हें राजनीति में भागीदारी से वंचित करता है।

सुधार की संभावनाएँ

1. जागरूकता अभियान: महिला और युवा मतदाताओं को उनके अधिकारों और राजनीतिक प्रक्रिया के महत्व के बारे में जागरूक करने के लिए सरकारी और गैर-सरकारी संगठनों द्वारा अभियान चलाए जा सकते हैं।
2. महिला और युवा नेतृत्व को बढ़ावा: राजनीतिक दलों को अधिक महिला और युवा नेताओं को नामांकित करने और उनका समर्थन करने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।
3. डिजिटल साक्षरता: युवाओं और महिलाओं के लिए डिजिटल साक्षरता को बढ़ावा देने के लिए कार्यक्रम चलाए जाने चाहिए ताकि वे डिजिटल प्लेटफॉर्म का अधिक प्रभावी ढंग से उपयोग कर सकें।
4. मतदान प्रणाली में सुधार: ऑनलाइन मतदान प्रणाली और बायोमेट्रिक पहचान जैसी तकनीकों का उपयोग किया जा सकता है, जिससे चुनाव प्रक्रिया में पारदर्शिता और सहभागिता बढ़ेगी।

निष्कर्ष

भारत में महिला और युवा मतदाताओं की भूमिका लोकतंत्र में एक महत्वपूर्ण परिवर्तनकारी

शक्ति के रूप में उभर रही है। उनके बढ़ते मतदान प्रतिशत से यह स्पष्ट होता है कि वे न केवल अपने अधिकारों के प्रति जागरूक हैं बल्कि समाज में सकारात्मक बदलाव की भी इच्छा रखते हैं। राजनीतिक दलों को अब महिलाओं और युवाओं के मुद्दों को प्राथमिकता देनी होगी ताकि वे इस बड़े मतदाता समूह का समर्थन प्राप्त कर सकें। महिला और युवा मतदाताओं के सशक्तिकरण से भारत का लोकतंत्र और अधिक समावेशी, पारदर्शी, और उत्तरदायी बन सकता है।

इस शोध पत्र में भारतीय लोकतंत्र में महिला और युवा मतदाताओं के योगदान, उनके प्रभाव और सुधार की संभावनाओं पर विस्तार से चर्चा की गई है।

संदर्भ ग्रन्थ :

पुस्तकों और प्रकाशनों से

1. "इंडियन डेमोक्रेसी: नॉर्म्स एंड पोलिटिक्स" – निरजा गोपाल जयाल

2. "भारत का संविधान" – भारतीय संविधान के विभिन्न अनुच्छेद और धाराएं, विशेष रूप से महिलाओं और युवाओं के अधिकारों पर चर्चा

3. "डेमोक्रेटिक ट्रांसफॉर्मेशन एंड द यंग वोटर्स" – युवा वोटरों की भूमिका पर केंद्रित शोध पत्र और पुस्तकें

4. "इलेक्शन स्टडीज़ इन इंडिया" – भारतीय चुनावी डेटा और महिला-युवा मतदाताओं पर आधारित अध्ययनों पर केंद्रित पुस्तक

सरकारी और संस्थागत रिपोर्ट्स से

1. निर्वाचन आयोग की रिपोर्ट

भारतीय चुनावों में महिला और युवा मतदाताओं की भागीदारी से जुड़े आंकड़े

2. राष्ट्रीय युवा नीति 2014 – युवाओं के राजनीतिक अधिकार और जागरूकता पर केंद्रित नीति

3. महिला सशक्तिकरण नीति 2001

महिलाओं के राजनीतिक सशक्तिकरण और भागीदारी को प्रोत्साहित करने वाले दिशा-निर्देश

ऑनलाइन संसाधनों और जर्नल्स से

1. Association for Democratic Reforms (adrindia.org)

महिला और युवा मतदाताओं के योगदान और डेटा पर अध्ययन

2. PRS Legislative Research (prsindia.org)

महिला और युवा मतदाताओं से संबंधित नीति अनुसंधान

3. लोकनीति - सीएसडीएस

चुनावी सर्वेक्षण और डेटा, विशेष रूप से महिला और युवा मतदाताओं पर।